विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०३/०९/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: दशम:पाठनाम जटायो: शौर्यम्

श्लोक५. निवर्तय मतिं नीचां परदाराभिमर्शनात् ।

न तत्समाचरेद्धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ।।

अन्वय:- (त्वम्) परदारा अभिमर्शनात् (स्वां) नीचां मतिम् निवर्तय धीर: न तत् समाचरेत् यत् पर:अस्य विगर्हयेत् ।

शब्दार्था: -

निवर्तय - हटा लो , मतिम् – विचार को , नीचां – गन्दी , परदारा – पराई स्त्री के , अभिमर्शनात् – स्पर्श दोष से , समाचरेत् -आचरण करना चाहिए ,धीर:-बुद्धिमान,विगर्हयेत्–निन्दा

अर्थ-पराई नारी (पर स्त्री) के स्पर्श दोष से तुम अपनी नीच बुद्धि (नीच विचार) को हटा लो , क्योंकि बुद्धिमान (धैर्यशाली)मनुष्य को वह आचरण नहीं करना चाहिए,जिससे कि दूसरे लोग उसकी निन्दा (बुराई) करें ।